

फक्सदो के साथ व्यापारिक फक्सों भनना, परीति, सोयाशीब, रतनजीत आदि की सौती की जा रही है। ऐसे में विद्युतों की अवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है बढ़े हुए और बढ़लती हुई अवश्यकता से खिलाफ संघ की भ्रमिका इतनी महत्वपूर्ण हो गई है। और संघ अपने तेजी से महत्व की घटाव में रखते हुए कारों का वितरण रहा है।

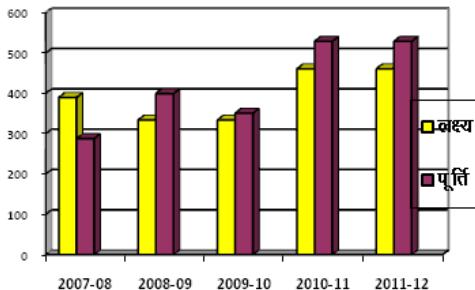
तालिका क्र. १

वर्षावार विपणन संघ की रासायनिक खाद्य व बीज के विक्रय की जानकारी (राशि करोड़ों में)

वर्ष	लक्ष्य	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	390.28	287.96	73.78%
2008-09	334.23	399.37	119.49%
2009-10	334.00	351.78	105.32%
2010-11	466.24	416.42	89.31%
2011-12*	460.77	529.23*	114.86%*
योग	1985.52	1984.76	99.96%

स्त्रोत :- वार्षिक प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपुर

*आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।



तालिका क्रमांक - 1 से स्पष्ट है कि विधायन संघ की राशायनिक स्थाद व बीज को विक्रय का प्रतिशत वर्ष 2007-08 में 73.78% व वर्ष 2010-11 में 89.31% रही अतिरिक्त उत्तर वर्षों में लक्ष्य की अपेक्षा पूर्ण कम हुई। वर्षीय वर्ष 2008-09 व 2009-10 तथा 2011-12 (31.12.2012) में लक्ष्य से अधिक रकमान्तर प्राप्त हुई प्रतिशत कमशः: 119.49%, 105.32%, तथा 114.48% रही। तालिका को एवं विस्तृत देखने के लिए ज्ञात होता है कि गत 5 वर्षों में स्थाद व बीज का वित्तया प्रत्येक वर्ष सफलता पूर्वक विक्या जा रहा है।

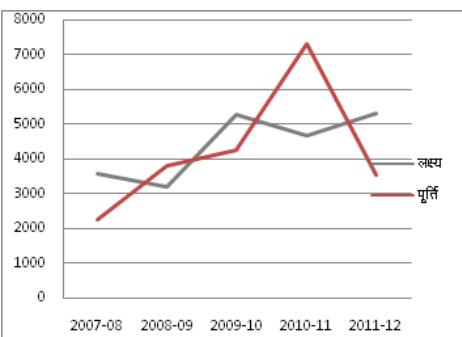
तालिका क २

विश्व वर्षों में विपणन का संघ द्वारा समर्थन माल्य पर धारा उपार्जन का विवरण (अश्वि कर्तव्यों से)

वर्ष	लक्ष्य	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	3568.80	2234.85	62.62%
2008-09	3202.05	3794.12	118.49%
2009-10	5277.75	4253.02	80.58%
2010-11	4680.00	7301.32	156.01%
2011-12*	5310.00	3512.00*	66.14%*
योगी 2038.60		21095.31	95.72%

स्त्रौत :- वार्षिक प्रतिवेदन . छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपर

*आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।



तालिका क्रमांक:- 2 से स्पष्ट है कि विषयान संघ द्वारा समर्जन मूल्य पर धारा उपार्जन का लक्ष्य पर पूर्ण का प्रतिशत अधिकार अवधि में क्रमशः वर्ष 2007-08 में 62.62% वर्ष 2009-10 में 80.58% तथा वर्ष 2011-12 में 66.14% है अतः इन वर्षों में लक्ष्य से प्रतिशत क्रमशः धारा उपार्जन का उपार्जन हो गया है। वर्ष 2008-09 व वर्ष 2010-11 में प्रतिशत क्रमशः 118.49% व 156.01% रहा जो कि लक्ष्य से अधिक धारा के उपार्जन को स्पष्ट करता है।

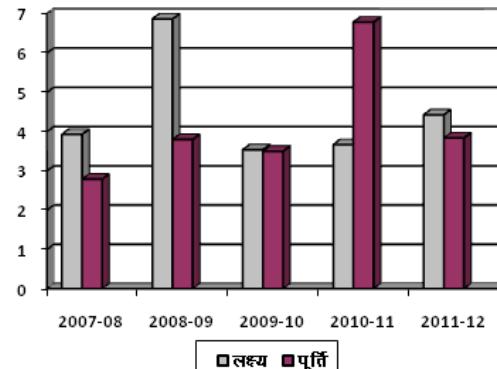
तालिका क्र. ३

वर्षवार विपणन संघ के द्वारा पश्च आहार की विक्रय स्थिति निम्नानुसार है (राशि करोड़ में)

सत्र	वर्क्षिय	पूर्ति	प्रतिशत
2007-08	3.93	2.79	70.99%
2008-09	6.87	3.8	55.31%
2009-10	3.54	3.50	98.87%
2010-11	3.67	6.79	185.01%
2011-12	4.43	3.84*	86.68%
योग	22.44	20.72	92.34%

स्त्रोत :- वार्षिक प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ रायपुर

* आकड़े 31.12.2012 तक के अवधि का लिया गया है।



तात्कालिक क्रमांक -3 से स्पष्ट है कि विषयाण संघ के द्वारा पथु आहार की विद्युत वर्ष 2010-11 में 185.01% रही जो कि लक्ष्य से अधिक वितरण का प्रदर्शन करता है तथा शेष वर्षों में क्रमशः 2007-08 में 50.99%, 2008-09 में 55.31% वर्ष 2009-2010 में 98.66% तथा वर्ष 2011-12 (31.12.2012) 86.68% रही है। ब्रातः संस्था इन वर्षों में लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाई है किन्तु विषयाण संघ के द्वारा पथु आहार की विद्युत उत्तरवाय में अतिरिक्त जगह रखी है।

বিজ্ঞান

संघ द्वारा किये जा रहे तीव्र प्रमुखता कारोंगे । खाद्य व शीतका वितरण । 2. समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन व 3. पशु आहार की विक्री में से भेत पांच वर्षों के आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राशायनिक खाद्य व शीतका विक्रय की लक्ष्य पूर्ति 99.96% जबकि समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लक्ष्य की पूर्ति 95.22% रहा तथा पशु आहार विक्रय के लक्ष्य की पूर्ति 92.34% रहा है। शृत प्रतिशत बद्धता की पूर्ति न होने के बावजूद श्री संघ का अन्तर्गत अंतर्यामीकरण कहा जा सकता है क्योंकि मांग की कमी, प्राकृतिक कारण, उत्पादन में कमी, तथा बाजार का प्रभाव आपि पर विश्विर करता है।

लोगों में जागरूकता उत्पन्न कर व मैदानी स्तर पर कार्य प्रणाली में कक्षावट व सुधार लाकर लक्ष्य की पूर्ति की जा सकती है व अधिकाधिक कृषबो को इस से लाभान्वयत किया जा सकता है।

अन्नाव -

- विपणन संघ के माध्यम से अधिक से अधिक सदस्यों को जोड़कर लाशान्वित किया जाना चाहिए।
 - संघ के प्राथमिक सभिताओं के माध्यम से छिपु जा रहे कार्यों की विस्तारित करता चाहिए।
 - शासीय कृषकों को जागरूक किया जाना चाहिए जिससे वे बाजार में शोषित न हो।
 - समय पर स्थाद शीज की पूर्ण कराना व समय पर घाट डपार्जन की समुचित व्यवस्था ही चाहिए।

REFERENCE

- ¹ आर्थिक परिवेश के अवधारणाएँ और उनकी विवरणों के बारे में जानकारी देने के लिए इस अध्ययन की आधारित प्राप्ति हैं। अतः इस अध्ययन की आधारित प्राप्ति हैं।